इत्र के बढ़ते बाजार से महकी शहर की फिजा, एक माह में 20 करोड़ का कारोबार

मोहम्मद दाऊद खान● जागरण

कानपुर : इत्र का बाजार अब कानपुर की फिजाओं को महका रहा है। इत्र के बढ़ते इस बाजार का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मार्च में करीब 20 करोड़ का कारोबार हो चुका है। इत्र का शौक रखने वालों के लिए सैकड़ों तरह की खुशबू से बाजार महक रहा है। इसकी कीमत की बात की जाए तो आठ मिलीलीटर इत्र 100 से लेकर 8000 रुपये तक का है। इनको सिंथेटिक रूप से तैयार किया जाता है। कन्नौज से आने वाले असली इत्र की कीमत तो लाखों रुपये हैं।

नालारोड स्थित इत्र के थोक व्यापारी सनी बताते हैं शहर से पूरे प्रदेश में इत्र की आपूर्ति की जाती हैं। हर वर्ग को ध्यान में रखकर सस्ते से महंगे तक इत्र हैं। इत्र का अपना अलग शौक है इसके कद्रदान कीमत की परवाह नहीं करते हैं। रमजान के मौके पर इसकी मांग सबसे ज्यादा हो रही है। इसे तोहफा देने के लिए भी पसंद किया जा रहा है।

गुजरात से लेकर दुबई तक के इत्र : बाजार में देश में बने इत्र के साथ विदेश तक के इत्र मौजूद हैं। इनमें गुजरात, मुंबई, कोलकाता, दुबई, सऊदी अरब शामिल हैं। इसके अतिरिक्त कन्नौज से भी इत्र आते हैं।

नालरोड स्थित दुकान पर सजे इत्र● जागरण

इन इत्रों की भा रही खुशबू

शनाया, मिजयान, ऊद, मुश्क, जन्नतुल फिरदौस, गुलाब, खस, रजाली, मुखल्लत, सुल्तान, असील, मजमुआ, हिना शमामा

रमजान में बढ़ जाती मांग

पैगंबर-ए-इस्लाम इत्र का प्रयोग करते थे। वे खुशबू का तोहफा भी पसंद करते थे। रमजान व उसके बाद ईद को लेकर इस वजह से इत्र की मांग बढ़ जाती है। लोग एक दूसरे को इत्र के तोहफे भी देते हैं। तरावीह के नमाज पूरी होने पर भी कई लोग इत्र की शीशी बांटते हैं।

युवा वर्ग को पसंद आ रहे इत्र की खुशबू वाले परफ्यूम

युवा वर्ग को इत्र की खुशबू वाले बिना एल्कोहल वाले परफ्यूम पसंद आ रहे है। एल्कोहल वाले इत्र लगाना वर्जित होने की वजह से कंपनियों ने भी युवाओं की पसंद को देखते हुए बिना अलकोहल वाले परफ्यूम पेश किए हैं। इनकी भी मांग बढ़ रही है। इत्र की तासीर के अनुसार उसका प्रयोग किया जाता हैा। गर्मी में खस लगाया जाता है, यह ठंडक पहुंचाता है, सर्दी में शमामा का का प्रयोग होता है, इसकी तासीर गर्म होती है। वर्षा में मिट्टी के इत्र का प्रयोग होता है, इसकी खुशबू मिट्टी के प्याले पर पानी पड़ने जैसी होती है।

रुह गुलाब, देशी ऊद, शमामा की कीमत के कद्रदान भी कम नहीं : कन्नौज से आने वाले वाले असली इत्र के कद्रदानों की भी कमी नहीं है। इत्र कारोबारी शम्मू बताते हैं कि शमामा नाम का इत्र 1000 रुपये का 10 मिली है, यानी एक लाख रुपये लीटर। देसी ऊद नया 16 लाख रुपये लीटर, पुराना 30 लाख रुपये लीटर, रूह खस एक लाख रुपये लीटर, रूह गुलाब 16 लाख रुपये लीटर है। ये इत्र फूलों व जड़ी बूटियों से पारंपरिक तरीके से तैयार किए जाते हैं इनमें मिलावट नहीं होती है।